श्री रामलिंगा स्वामी

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

5 अक्तूबर, 2023 को भारत में **श्री रामलिंगा स्वामी**, जिन्हें वल्लालर के नाम से भी जाना जाता है, **की 200वीं जयंती** मनाई गई।

//

श्री रामलिंगा स्वामी के प्रमुख योगदान:

- **परिचय:**
  - श्री रामलिंगा स्वामी **19वीं सदी** के एक **प्रमुख तमिल कवि** और **"ज्ञान सिद्धार"** वंश के सदस्य थे।
    - उनका जन्म **तमिलनाडु** के **मरुधुर गाँव** में हुआ था।
- **सामाजिक सुधार का दृष्टिकोण:**
  - वल्लालर का दृष्टिकोण **धार्मिक, जाति और पंथ की बाधाओं** से परे है, उनका मानना है कि ब्रह्मांड के प्रत्येक अंश में दिव्यता है।
    - वल्लालर [जाति व्यवस्था](#) के सख्त खिलाफ थे और उन्होंने वर्ष 1865 में '**समरसा वेद सन्मार्ग संगम**' की शुरुआत की, जिसे बाद में **'समरसा शुद्ध सन्मार्ग सत्य संगम**' नाम दिया गया।
  - उन्होंने वर्ष 1867 में तमिलनाडु के वडालुर में मुफ्त भोजन सुविधा **'द सत्य धर्म सलाई**' की स्थापना की, जो बिना जातिभेद के सभी लोगों को सेवा प्रदान करती थी।
  - जनवरी 1872 में वल्लालर ने वडालुर में **'सत्य ज्ञान सभा' (हॉल ऑफ ट्रू नॉलेज)** की स्थापना की।
- **दार्शनिक मान्यताएँ और शिक्षाएँ:**
  - "जीवित प्राणियों की सेवा ही मुक्ति/मोक्ष का मार्ग है" वल्लालर की प्राथमिक शिक्षाओं में से एक थी।
  - शुद्ध सन्मार्ग के अनुसार, मानव जीवन का प्रमुख पहलू **धर्मदान और दैवीय अभ्यास पर आधारित प्रेम** होना चाहिये, जिससे विशुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होगी।
  - वल्लालर का मानना था कि मनुष्य के पास जो बुद्धि है, वह **भ्रामक (माया)** बुद्धि है तथा सटीक अथवा अंतिम नहीं है।
    - उन्होंने अंतिम बुद्धिमत्ता के मार्ग के रूप में '**जीव करुण्यम**' **(जीवित प्राणियों के प्रति करुणा)** पर ज़ोर दिया।
  - उन्होंने भोजन के लिये जानवरों को न मारने का आह्वान किया और **गरीबों को खाना खिलाना सर्वोच्च धर्म बताया।**
  - उनका यह भी मानना था कि अनुग्रह के रूप में ईश्वर **दया और ज्ञान का अवतार** है तथा **दया ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग** है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/shri-ramalinga-swamy